भरतपुर

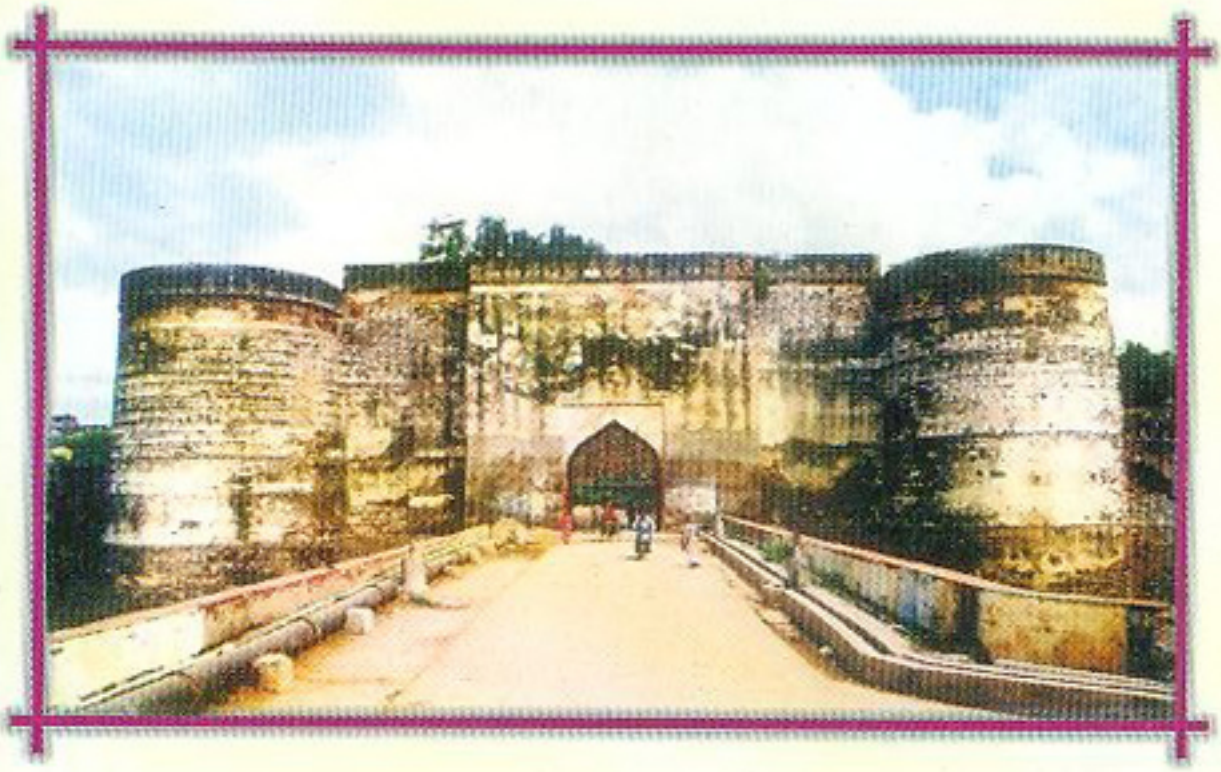

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
जयपुर मण्डल, जयपुर

भरतपुर

भरतपुर राजस्थान का पूर्वी प्रवेश द्वार माना जाता है। छठी सदी ईसा पूर्व में यह क्षेत्र मत्स्य जनपद का अभिन्न अंग था। पुरातात्विक दृष्टिकोण से इस क्षेत्र की प्राचीनता पाषाण युग तक जाती है। अतीपुर जैसे कतिपय स्थल हैं, जहां से आरम्भिक पुरा पाषाण काल के उपकरण मिले हैं। आरम्भिक ऐतिहासिक, ऐतिहासिक एवं मध्यकाल में भी यह क्षेत्र लगातार आबाद रहा। अठारहवीं सदी ई. में यह शहर नवस्थापित जाट रियासत के प्रमुख शक्ति केन्द्र के रूप में विकसित हुआ।

बदनसिंह (1722-56) को भरतपुर जाट रियासत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उन्होंने आसपास के कई क्षेत्रों पर आधिपत्य करके भरतपुर रियासत को एक सुदृढ़ नींव प्रदान की। बदनसिंह के पुत्र एवं उत्तराधिकारी सूरजमल (1756-63 ई.) एक महान शासक हुए, जिनके शासनकाल में जाट शक्ति अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई। एक योग्य कूटनीतिज्ञ व सेनानायक होने के साथ सूरजमल स्थापत्य कला के भी प्रेमी थे। इस जनपद में स्थित अनेकानेक भव्य महल, सरोवर, बाग व अन्य सम्बन्धित संरचनाएं आज भी उनकी गौरव गाथा की साक्षी हैं।

भरतपुर किला

लोहागढ़ के उपनाम से प्रसिद्ध यह किला महाराजा सूरजमल द्वारा 18वीं सदी ई. के पूर्वार्द्ध में बनवाया गया था। पाषाण खण्डों से बनी ऊँची प्राचीर युक्त इस आयताकार किले को आठ बुर्जों के द्वारा मजबूती प्रदान की गई है। इसके चारों ओर 18.3 मीटर चौड़ी एक खाई मौजूद है, जो जल से परिपूर्ण है। किले में प्रवेश हेतु केवल दो द्वार हैं- उत्तर की ओर से अष्टधातु दरवाजा एवं दक्षिण की ओर से चौबुर्जा दरवाजा। किले के अन्दर तत्कालीन कई महल एवं संरचनाएं मौजूद हैं।

इनमें जवाहर बुर्ज विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस बुर्ज का निर्माण महाराजा सूरजमल ने करवाया था। इसके ऊपर स्थित कतिपय मंडपों का निर्माण जवाहर सिंह (1763-68 ई.) के द्वारा करवाया गया। यहां कुल तीन दीर्घा मौजूद हैं, जिनमें से एक में पौराणिक आख्यानों का चित्रण है। महाराजा बृजेन्द्र सिंह द्वारा स्थापित एक लौह स्तम्भ पर जाट शासकों की वंशावली अंकित है।

भरतपुर के अन्य प्रमुख स्मारकों में भरतपुर महल, किशोरी महल, गंगा मन्दिर, लक्ष्मण मन्दिर एवं जामा मस्जिद उल्लेखनीय हैं। इनमें से गंगा मन्दिर 19वीं सदी ई. की एक महत्वपूर्ण संरचना है जिसके पाषाण स्तम्भों, दीवारों एवं मेहराबों पर बेलबूटों की सुन्दर नक्काशी की गई है।

डीग के राजभवन

भरतपुर से 34 किमी उत्तर पश्चिम में स्थित डीग के राजभवनों का निर्माण महाराजा सूरजमल एवं उनके पुत्र महाराजा जवाहरसिंह द्वारा करवाया गया था। दो सुरम्य सरोवरों के बीच स्थित भवनों के ये समूह स्थानीय तौर पर "जलमहल" के नाम से प्रसिद्ध हैं। हल्के गुलाबी रंग के बलुआ पत्थर से निर्मित इन भवनों की स्थापत्य कला को प्रायः जाट स्थापत्य के नाम से जाना जाता है जिसमें उत्तर मुगलकालीन स्थापत्य एवं राजपूताना शैली के कई तत्वों का सम्मिश्रण मौजूद है। चार बाग प्रणाली के एक केन्द्रीय उद्यान के चतुर्दिक ये महल स्थित हैं। इन्हें- 1. गोपाल भवन मय सावन एवं भादो मंडप 2. सूरज भवन 3. हरदेव भवन, 4. किशन भवन 5. केशव भवन तथा 6. नंद भवन के नाम से जाना जाता है। व्यापक पैमाने पर फव्वारों का प्रयोग डीग के जलमहलों की अद्वितीय विशिष्टता है। महलों में प्रवेश हेतु तीन द्वार हैं जिनमें सिंहपोल प्रमुख है।

उल्लेखनीय है कि गोपाल भवन एवं किशन भवन में एक संग्रहालय का विकास किया गया है जिसमें रियासत कालीन वस्तुओं के माध्यम से तत्कालीन जीवनशैली को जीवंत दर्शाने का प्रयास किया गया है।

चौरासी खंभा, कामां

भरतपुर से लगभग 56 किमी उत्तर पश्चिम में स्थित कामां का तादात्म्य पौराणिक आख्यानों में वर्णित 'काम्यवन' से किया जाता है। पुरातात्विक दृष्टि से इस स्थल की प्राचीनता लगभग 8वीं-9वीं सदी ई.पू. तक आंकी जाती है।

प्रायः चौरासी खंभा के नाम से प्रसिद्ध यह स्मारक एक आयताकार संरचना है। केन्द्र में एक खुला आंगन है जो चतुर्दिक स्तम्भ युक्त बरामदा से घिरा है। पूर्वाभिमुख द्वार पर एक अरबी लेख अंकित है जिसके अनुसार हिजरी संवत् 600 (सन् 1204ई.) में एक अमीर के द्वारा इसका निर्माण करवाया गया था। स्तम्भों पर नवग्रह, गणेश, विष्णु, नृसिंह तथा शिव-पार्वती इत्यादि की प्रतिमाओं का शिल्पांकन किया गया है।

प्राचीन टीला, मल्लाह

यह टीला भरतपुर शहर में केवलादेव घना राष्ट्रीय पक्षी उद्यान के नजदीक स्थित है। इस टीले से चित्रित धूसर मृदभांड प्राप्त हुए हैं, जो पहली सहस्राब्दी ई.पू. के चारित्रिक मृदभांड स्वीकार किये जाते हैं। कतिपय प्रतिमा अवशेषों का मिलना विशिष्ट है।

प्राचीन टीला एवं यक्ष प्रतिमा, नोह

भरतपुर से 10 किमी पूर्व में नोह का प्राचीन टीला है। राजस्थान सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा सन् 1963-67 के दौरान इस टीले का उत्खनन कराया गया। उत्खनन के परिणामस्वरूप कुल पांच कालों के लगातार मानव बसाव के प्रमाण प्राप्त हुए। इनमें पहला सांस्कृतिक अनुक्रम उन लोगों का था, जो गेरुए रंग के मृदभांड का प्रयोग करते थे। इस प्रकार नोह के टीले की प्राचीनता लगभग द्वितीय सहस्राब्दी ई.पू. आंकी जा सकती है। उत्तरी काली चमकदार मृदभांडों की प्राप्ति इस स्थल की एक अन्य विशिष्टता रही।

नोह ग्राम में स्थित यह विशाल यक्ष प्रतिमा भारतीय मूर्ति कला के प्रारम्भिक यक्ष प्रतिमाओं में से एक है। इसकी तिथि द्वितीय सदी ई.पू. निर्धारित की जाती है। 2.32 मी. ऊंचाई व 0.90 मी. चौड़ाई की परिमाप वाला यह यक्ष घटोदर है तथा अधोवस्त्र धारण किए हुए है। पेट के ऊपर उदरबंद है। आभूषण के रूप में कंठाहार तथा बाजूबंद मौजूद है। सिर पर पगड़ी है, जिसमें बायीं ओर एक गांठ लगी हुई है। चेहरे पर व्यक्त गम्भीर भाव भारतीय पौराणिक साहित्यों में वर्णित यक्षों की चारित्रिक विशिष्टताओं के अनुरूप है।

बयाना का प्राचीन किला एवं अन्य स्मारक

भरतपुर से 40 किमी दक्षिण पश्चिम में स्थित बयाना प्राचीन समय में शांतिपुर, श्रीपथ तथा विजय मंदिरगढ़ आदि कई नामों से प्रसिद्ध था। इसके आसपास के क्षेत्रों में ऐसे पुरातात्विक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जो इस स्थल का सम्बन्ध यौधेयों तथा गुप्तों से स्थापित करते हैं। गुप्तों के स्वर्ण सिक्कों की 'बयाना निधि' भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध है।

दो समानान्तर पहाड़ियों पर स्थित वर्तमान किला 11वीं ई. में विजयपाल के द्वारा बनवाया गया था। प्रस्तर खण्डों से निर्मित और बुर्जों के प्रयोग से यह एक विस्तृत एवं दुर्भेद्य किला है। मुख्य प्रवेश द्वार दक्षिण की ओर स्थित है। किले के अन्दर कई महल, बावड़ी, हवेली, मन्दिर एवं मीनार मौजूद हैं, जिनमें रानी महल, भीमलाट व लोदी मीनार प्रसिद्ध हैं।

पूर्व मध्यकाल, सल्तनत काल एवं मुगलकाल में भी बयाना तत्कालीन राजनैतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बना रहा। अतएव उपरोक्त काल के कई स्मारक बयाना में स्थित है। इनमें ऊषा मन्दिर, ऊषा मस्जिद, लोदी मीनार, झजरी, इस्लामशाह गेट, सराय सद-उल्लाह, अकबर की छतरी, जहाँगीरी दरवाजा तथा ब्रह्माबाद ईदगाह को राष्ट्रीय महत्व का संरक्षित स्मारक घोषित किया गया है।

लाल महल, रूपवास

भरतपुर से लगभग 35 किमी. दक्षिण पूर्व में स्थित रूपवास का वर्णन जहाँगीर ने रूपसिंह के जागीर के रूप में किया है, जिसे कालान्तर में अमानुल्लाह को दे दिया गया था। रूपसिंह को चित्तौड़ के राणाओं का वंशज माना जाता है। उसने एक महल व जलाशय का निर्माण करवाया था। यह महल लाल बलुआ पत्थरों से निर्मित होने के कारण स्थानीय तौर पर "लाल महल" के नाम से प्रसिद्ध है। पृष्ठभूमि में मौजूद सरोवर को निहारता उक्त महल का दक्षिणी हिस्सा आवास के उद्देश्य से बनाया गया प्रतीत होता है। स्थापत्य शैली के आधार पर इसकी तिथि 17वीं शताब्दी ई. निर्धारित की जाती है।

अन्य स्मारक

भरतपुर जिले के अन्य पुरातात्विक धरोहरों में वैर का किला, डीग का किला, कुम्हेर का महल, कामां का चील महल तथा डीग का लक्ष्मण मन्दिर अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इनमें से अन्तिम पश्चिम भारतीय मन्दिर स्थापत्य तथा उत्तर मुगल स्थापत्य का सुन्दर सम्मिश्रण प्रस्तुत करता है।

'आइये हम संकल्प लें कि हम अपने धरोहर का सम्मान करेंगे, इसे सुरक्षित रखेंगे एवं मूल स्वरूप में इसे अपनी भावी पीढ़ी को हस्तान्तरित कर अपने दायित्व का समुचित निर्वाह करेंगे।'

आलेख - शिव कुमार भगत

मुद्रक : टेक्नोक्रेट ऑफसेटर्स, फोन : 0140-2504404